__/__/____

Tender Heart High School, Sector 33-B, Chandigarh
Date - Class - VI
Subject - Hindi Literature Page - 1
Subject Teacher - Ms. Roma Rani

पुस्तक - नवतरंग भाग-6
पाठ-2 'ईदगाह'
लेखक - 'मुंशी प्रेमचंद'

सुप्रभात प्यारे बच्चो!

यह पाठ-2 'ईदगाह' कक्षा छठी की हिन्दी साहित्य की पाठ्यपुस्तक नवतरंग भाग-6 की पृष्ठ संख्या - 8 में दिया गया है। यह पाठ आपको 4 अप्रैल, 2022 को भेजा जाएगा।

प्यारे बच्चो! आज हम पाठ-2 'ईदगाह' का अगला भाग पढ़ेंगे। इसलिए सभी बच्चे अपनी हिन्दी की पुस्तक नवतरंग भाग-6 का पृष्ठ - 8 निकाल लें और अपने पास हिन्दी की एक अभ्यास पुस्तिका भी रख लें क्योंकि मैं आपको पाठ के बीच में कुछ कार्य लिखने के लिए भी दूँगी। यदि आप तैयार हैं तो मैं आपको पाठ 'ईदगाह' का अगला भाग समझाने जा रही हूँ। सभी बच्चे इसे ध्यानपूर्वक पढ़ेंगे एवं समझेंगे।

बच्चो! पाठ के पिछले भाग में हमने पढ़ा था कि हामिद अपने मित्रों के साथ ईदगाह जाता है। जहाँ वह नमाज पढ़ने के बाद मेला देखने लगते हैं। हामिद के पास सात तीन पैसे हैं और उसके मित्रों महमूद और मोहसिन के पास बारह और पन्द्रह पैसे हैं। सभी बच्चे मेले में से मिट्टी के बने खिलौने खरीदते हैं और झूले भी लेते हैं परन्तु हामिद अपने थोड़े से पैसों को ऐसे ही नहीं गँवाना चाहता।

Scanned with CamScanner

_/_/_

Date- Class - VI

Subject- Hindi Literature Page - 2

Subject Teacher- Ms. Roma Rani

बच्चो ! अब मैं आपको आगे पाठ पढ़कर सुनाऊँगी सभी बच्चे इसे अपनी-अपनी पुस्तक में से देखकर मेरे साथ-साथ पढ़ेंगे।

हैं। ये सब दो-दो पैसे के खिलौने हैं। हामिद के पास कुल तीन पैसे हैं, इतने महँगे खिलौने वह कैसे ले खिलौना कहीं हाथ से छूट पड़े तो चूर-चूर हो जाए। ज़रा पानी पड़े तो सारा रंग धुल जाए। ऐसे खिलौ लेकर वह क्या करेगा, किस काम के!

मोहसिन कहता है—मेरा भिश्ती रोज़ पानी दे जाएगा साँझ-सबेरे।

महमूद—और मेरा सिपाही घर का पहरा देगा। कोई चोर आएगा, तो फ़ौरन बंदूक से फायर कर देगा।

नूरे—और मेरा वकील खूब मुकदमा लड़ेगा।

सम्मी—और मेरी धोबिन रोज़ कपड़े धोएगी।

हामिद खिलौनों की निंदा करता है—मिट्टी ही के तो हैं, गिरे तो चकनाचूर हो जाएँ, लेकिन ललचाई हु आँखों से खिलौनों को देख रहा है और चाहता है कि ज़रा देर के लिए उन्हें हाथ में ले सकता। उसके हा अनायास ही लपकते हैं, लेकिन लड़के इतने त्यागी नहीं होते हैं, विशेषकर जब अभी नया शौक है। हामि ललचता रह जाता है।

खिलौने के बाद मिठाइयाँ आती हैं। किसी ने रेवड़ियाँ ली हैं, किसी ने गुलाबजामुन, किसी ने सोहन हलवा। मज़े से खा रहे हैं। हामिद बिरादरी से **पृथक्** है। अभागे के पास तीन पैसे हैं। क्यों नहीं कुछ लेकर खाता? ललचाई आँखों से सबकी ओर देखता है।

मोहसिन कहता है—हामिद रेवड़ी ले जा, कितनी खुशबूदार है!

हामिद को संदेह हुआ, ये केवल क्रूर विनोद है। मोहसिन इतना उदार नहीं है, लेकिन यह जानकर भी वह उसके पास जाता है। मोहसिन दोने से एक रेवड़ी निकालकर हामिद की ओर बढ़ाता है। हामिद हाथ फैलाता है। मोहसिन रेवड़ी अपने मुँह में रख लेता है। महमूद, नूरे और सम्मी खूब तालियाँ बजा-बजाकर हँसते हैं। हामिद खिसिया जाता है।

मोहसिन—अच्छा, अबकी ज़रूर देंगे हामिद, अल्लाह कसम, ले जा।

बातचीत के लिए

हामिद खिलौने की निंदा क्यों करता है?

मोहसिन क्या शरारत करता है?